

प्रभु-चिन्तन या पर-चिन्तन?

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

हमारी योग-साधना के पाँच मूल तत्व हैं। एक तो यह है कि हम परमपिता परमात्मा के ईश्वरीय गुणों का मनन, चिन्तन और रसास्वादन करते हैं। दूसरा यह कि हम अपने बारे में भी इसी निष्ठा अथवा निश्चय को धारण करते हैं कि हमारा वास्तविक एवं आदिम स्वरूप पवित्रता, शान्ति तथा प्रेम है। तीसरा यह कि हम स्वयं को एक ज्योति-बिन्दु आत्मा मानते हैं और परमात्मा को भी देह-रहित एक शाश्वत ज्योति-बिन्दु रूप मानते हैं और इस प्रक्रिया अथवा विधि से देह की विस्मृति कर आत्मा के स्वरूप में टिकते हैं। चौथा तत्व यह है कि हम आत्मा के स्वरूप की तथा परमात्मा के स्वरूप एवं गुणों की पुनः पुनः, पुनः पुनः स्मृति में लगे रहते हैं और इस स्मृति को निरन्तर या एक तान बनाते हैं। पाँचवां तत्व यह है कि हम इस स्मृति में प्रेम भावना, समर्पणमयता इत्यादि का समावेश करते हुए इसमें स्थिति तथा अनुभूति को प्राप्त करते हैं। इस प्रकार के अभ्यास, पुरुषार्थ या योग से हमारे संस्कारों में परिवर्तन आता है, इसमें पवित्रता, शान्ति आदि का उत्कर्ष होता है



तथा हमारा जीवन आध्यात्मिक महानता को प्राप्त करता है। हमारे इस पुरुषार्थ से हमारे मन का मणका विजयमाला में पिरोने के योग्य हो जाता है।

परन्तु बहुत बार देखा गया है कि व्यक्ति, इस पुरुषार्थ को छोड़कर उल्टी माला फेरने लगता है। अथवा, वह घण्टा-आधा घण्टा तो योग रूपी सुल्टी माला फेरता है और उसके बाद दिन-भर उल्टी माला फेरता है। कई बार तो कोई साधक योगाभ्यास के

समय भी उल्टी माला फेरने लगता है। उसका परिणाम भी उल्टा ही होता है।

पर-चिन्तन - उल्टी माला

हम ऊपर योग के पाँच मूल तत्वों का उल्लेख कर आए हैं, अब मान लीजिए कि कोई व्यक्ति किसी मनुष्य-तन-धारी में कोई अवगुण, दुर्गुण या त्रुटि देखता है, उसकी कमी-कमजोरी को देखने के बाद उसके मन में बार-बार उस देहधारी की स्मृति आ जाती है और उसके अवगुण या दुर्गुण की भी याद आती है और उस याद में उसके

प्रति घृणा या द्वेष का भी समावेश होता है और वह उस कटुता अथवा दुर्गुण की अनुभूति या स्थिति में होता है, तब इस प्रक्रिया को आप क्या कहेंगे?

इसमें एक तो परमात्मा के ईश्वरीय गुणों और दूसरा आत्मा के आदि स्वरूप की पवित्रता के चिन्तन की बजाय किसी व्यक्ति के दुर्गुणों ही का तो मनन-चिन्तन है। तीसरा, इसमें ज्योति-बिन्दु आत्मा और अशरीरी परमात्मा की स्मृति की बजाय

देहधारी ही की तो याद है और अपनी स्थिति भी तो दैहिक ही है। चौथा, किसी के दुर्गुणों का पुनः पुनः चिन्तन या दूसरों से उसका वर्णन, अर्थात् उसकी निन्दा भी तो इसमें समाई है। पाँचवा, उसकी निन्दा करते हुए या उसकी त्रुटियों को सोचते हुए मन में उसके प्रति घृणा-भाव, क्रोध या अपमान की भावना भी तो समाई हुई है। अतः यह तो योग-साधना के विरुद्ध ही प्रक्रिया है। इसका स्पष्ट अर्थ तो यह हुआ कि योग या ध्यान से जो लाभ होते हैं, वे सभी लाभ तो

इस प्रक्रिया से होंगे नहीं, बल्कि उनके विपरीत ही अब अनुभव होगा। दूसरे शब्दों में, लाभ की बजाय अब हानियाँ ही होंगी। योग से यदि स्वास्थ्य अच्छा होता है तो अब इस पर-चिन्तन और दोष-दर्शन से स्वास्थ्य बिगड़ेगा ही। योग से यदि मन में शान्ति मिलती है तो इस अवगुण-दृष्टि से अशान्ति ही होगी। योग से यदि देह से न्यारापन और हल्कापन अनुभव होता है तो इससे भारीपन होगा। योग से यदि उड़ती कला प्राप्त होती है,

आत्मा में बल भरता है और पवित्रता आती है तो इस पर-चिन्तन से पतन होगा और गिरती कला होगी तथा आत्मा में कमजोरी आएगी। इसलिए ही कहा गया है कि पर-चिन्तन पतन की जड़ है और आत्म-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है। संगमयुग का महोत्सव पुनः सभी को याद दिलाता है कि प्रभु-चिन्तन करो और पर-चिन्तन छोड़ो। एक परमात्मा ही का चिन्तन है।



अहमदनगर-महा. | श्री एम. वेंकट नायडू, मिनिस्टर फॉर अर्बन डेवलपमेंट, इनफोर्मेशन एंड ब्रॉडकास्टिंग को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके।



दिल्ली-पाण्डव भवन. | 'ट्रान्सफॉर्मिंग स्ट्रेस इन्टू हैपीनेस' विषयक कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के न्यायमूर्ति पी.सी. घोष। साथ हैं ब्र.कु. एम.वी. रमेश, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. लता।



कटक-ओडिशा. | बदीनारायण पात्र, ग्रामीण विकास मंत्री, ओडिशा को माउण्ट आबू ग्राम विकास प्रभाग के सम्मेलन में आने के लिए आमंत्रित करते हुए ब्र.कु. सुलोचना।



उदयपुर-राज. | 'वुमेन अवॉर्ड फंक्शन शक्ति 2017' के कार्यक्रम में 'उदयपुर टुडे' पुस्तिका का विमोचन करते हुए अवॉर्ड फंक्शन के एम.डी. प्रवीण रातलिया, फिल्म अभिनेत्री मुग्धा गोडसे, अरावली नर्सिंग इंस्टीट्यूट डायरेक्टर सुशीला अग्रवाल तथा ब्र.कु. रीटा।



दिल्ली-लॉरेन्स रोड. | 'राजयोग फेस्टिवल फॉर हेल्थ वेल्थ एंड हैपीनेस' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक राजेश गुप्ता, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. आशा तथा ब्र.कु. पूनम।



भरतपुर-राज. | सेवाकेन्द्र में आने पर स्वामी डॉ. कौशल किशोर महाराज, पीठाधीश्वर को सेवाकेन्द्र का अवलोकन करवाने के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता। साथ हैं ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. जयंत सिंह, ब्र.कु. सुदेश भारद्वाज तथा ब्र.कु. पावन।

आवश्यक सूचनाएँ

राखी का त्योहार हम सभी बड़े धूमधाम से मनाते हैं। परमात्मा द्वारा बांधी गई पवित्रता की राखी से हर मानव अपने आपको सुरक्षित एवं शक्तिशाली अनुभव करता है। उसी संदर्भ में आप सबके लिए खुशखबरी है कि सर्व सेंटर के लिए शिव बाबा की राखी ऑडियो-वीडियो विभाग



(काउंटर) पर उपलब्ध है। लगभग दो सौ वैरायटी की अलग-अलग राखियाँ उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी के लिए मधुबन में ऑडियो-वीडियो विभाग (काउंटर) पर संपर्क करें। ई.मेल - audiovisual@bkivv.org वेब - www.omshantimusic.net

एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग के लिए दो बी.के. मेल होस्टल वार्डन की अतिशीघ्र आवश्यकता है।

योग्यता - मान्यता प्राप्त युनिवर्सिटी से ग्रेजुएट

कार्यानुभव - कम से कम तीन वर्ष का किसी कॉलेज में वार्डन के रूप में
उम्र : 30-45 वर्ष
संपर्क करें...

एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ ग्लोबल

हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड।
मो. - 8432403244/ 9414143717
ई. मेल - nntagrawal@gmail.com

शांतिवन के ओमशान्ति मीडिया कार्यालय के लिए दो सेवाधारी भाइयों की आवश्यकता है, जो हिन्दी या

अंग्रेजी टाइपिंग जानता हो और कम्प्यूटर की बेसिक नॉलेज भी हो। लौकिक में पत्रकारिता का अनुभव हो

साथ ही लेखन में रुचि हो। संपर्क करें...मो. - 7014986494
ई.मेल - gangadhar@bkivv.org

एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज में दो बी.एस.सी. नर्सिंग ग्रेजुएट्स तथा दो एम.एस.सी. नर्सिंग ग्रेजुएट्स मेल/फीमेल की अतिशीघ्र आवश्यकता है।

विशेषज्ञता - ओ.बी.जी. व कम्प्युनिटी नर्सिंग।
कार्यानुभव - कम से कम एक वर्ष।
संपर्क करें - एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग

कॉलेज, शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड।
मो. - 9875197194
ई. मेल - slmgnc.raj@gmail.com